

# माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के संचार माध्यम के प्रयोग का उनके मूल्यों के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन

**डॉ प्रमोद कुमार मिश्र**

शोध—निदेशक,  
एसोसिएट प्रोफेसर,  
(शिक्षाशास्त्र विभाग)

नेहरू ग्राम भारती (मानित विविध)  
इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश।

**सुमन कन्नौजिया**

शोध—छात्रा,  
(शिक्षाशास्त्र)

शिक्षक शिक्षा विभाग  
नेहरू ग्राम भारती (मानित विविध)  
इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश।



**सारांश—** प्रस्तुत समस्या कथन ‘माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के संचार माध्यम के प्रयोग का उनके मूल्यों के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना’ है। अध्ययन में शोध विधि के अन्तर्गत वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत सहसंबंधात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। जनसंख्या प्रयागराज जनपद के माध्यमिक विद्यालयों के छात्र छात्राएँ हैं। प्रयागराज जनपद के माध्यमिक विद्यालयों का चयन स्तरीकृत प्रतिदर्श प्रतिचयन विधि द्वारा 20 विद्यालयों का चयन तथा कक्षा-9 में अध्ययनरत् 600 विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक न्यादर्शन विधि द्वारा किया गया है। उपकरण के रूप में स्वनिर्मित “संचार माध्यम का प्रभाव” एवं डॉ अर्चना दूबे एवं महेन्द्र पटिदार द्वारा निर्मित ‘पर्सनल वैल्यू क्वेश्चनायर’ का प्रयोग किया गया है। आँकड़ों के विश्लेषण हेतु सहसंबंध आधूर्ण गुणांक सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है। अध्ययन के निष्कर्ष में पाया गया कि—

- माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के संचार माध्यम के प्रयोग का उनके प्रतिबद्धता, मेहनत, ईमानदारी, आत्म—निर्भरता, सहयोग एवं सम्पूर्ण मूल्यों के मध्य सम्बन्ध नहीं है अर्थात् संचार माध्यम के प्रयोग से उनके प्रतिबद्धता, मेहनत, ईमानदारी, आत्म—निर्भरता, सहयोग एवं सम्पूर्ण मूल्यों से सम्बन्धित नहीं है।

- माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के संचार माध्यम के प्रयोग का उनके समस्या समाधान के मध्य धनात्मक एवं सार्थक सहसम्बन्ध है अर्थात् अधिक संचार माध्यम के प्रयोग करने वाले विद्यार्थियों में समस्या समाधान की क्षमता अधिक है।

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के संचार माध्यम के प्रयोग का उनके चुनौती, समूह कार्य, अनुशासन एवं समय पालन के मध्य ऋणात्मक एवं सार्थक सहसम्बन्ध है अर्थात् अधिक संचार माध्यम के प्रयोग करने वाले विद्यार्थियों में चुनौती, समूह कार्य, अनुशासन एवं समय पालन की कमी है।

**की—वर्ड :** माध्यमिक विद्यालय, विद्यार्थी, संचार माध्यम, मूल्य

## प्रस्तावना—

आज के युग में संचार का एक सशक्त माध्यम बन गया है। प्राचीन काल में महाभारत में संजय ने धृतराष्ट्र को अपनी दिव्य दृष्टि से युद्ध का सीधा प्रसारण किया। आज के भौतिकवादी लोग इस प्रसारण पर विश्वास नहीं करते पर यह तो मानना ही पड़ेगा कि दूरदर्शन, आकाशवाणी से साम्य रखने वाले जनसंचार के माध्यम का विकास भारत में बहुत पहले हो चुका था।

अपनी मनोभावनाओं को अभिव्यक्त करना तथा अपने सहजनों के साथ वार्तालाप करना। मनुष्य की आद्व प्रवृत्ति है, संचार या संवाद के बिना आधुनिक जीवन का कोई अस्तित्व नहीं है। आम तौर पर देखा जाए तो दो या दो से अधिक व्यक्तियों

के बीच विचारों अनुभूतियों और ज्ञान का प्रभावकारी आदान-प्रदान ही संचार है। संचार का तात्पर्य लोगों में ज्ञान को इस प्रकार गतिशील बनाना है कि वे उस ज्ञान को क्रिया रूप देते हुए उससे कुछ महत्वपूर्ण परिणाम उपलब्ध कर सकें।

संचार के माध्यम से दूसरों के विचारों मान्यताओं और व्यवहार में परिवर्तन लाने की चेष्टा करते हैं, संचार जीवन के साथ आरम्भ होता है तथा जीवन की समाप्ति पर ही इस पर विराम चिन्ह लगता है, संचार के बिना जीवन अर्थहीन ही नहीं, अस्तित्वहीन भी हो जाता है।

वर्तमान युग में अपने और संसार के प्रति लोगों की सोच, संस्कार, रीति-रिवाजों और दृष्टिकोणों पर संचार माध्यमों के प्रभाव को इन्कार नहीं किया जा सकता। जीवन शैली, चयन पर निर्भर होती है और चयन, सूचनाओं तथा सम्पर्क की प्रक्रिया के फल पर निर्भर होता है। संचार माध्यम ये सूचनाएँ लोगों तक पहुँचाते हैं। कि विभिन्न क्षेत्रों में किसी व्यक्ति के पास क्या विकल्प हैं और वह क्या चयन कर सकता है। वे अपनी इन अर्थपूर्ण सूचनाओं के माध्यम से लोगों की मान्यताओं, सोच, आकांक्षाओं, चयन और व्यवहार और वस्तुतः उनकी जीवन शैली के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अलबत्ता संचार माध्यमों के सम्बन्ध में लोगों का रुझान एकसमान नहीं होता बल्कि संचार माध्यमों से जिसका लगाव जितना अधिक होगा उतना ही उस पर संचार माध्यमों का प्रभाव भी अधिक होगा।

जीवन शैली पर प्रभाव डालने वाले तत्त्वों में संस्कृति की भूमिका भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इस सम्बन्ध में संस्कृति, उपभगों की वस्तुओं के बारें में लोगों की पसंद, शैली, पहचान और उन्हें स्वीकार करने की क्षमता पर सीधा प्रभाव डालती है और जीवन शैली को पूर्णतः भिन्न बना सकती है। इस बीच टेलीविजन सबसे महत्वपूर्ण तत्त्व के रूप में विभिन्न आयु के लोगों के व्यवहार को बनाता बिगाड़ता है। बहुत से परिवार अपने प्रतिदिन के समय का एक भाग टीवी देखकर बिताते हैं और मनोरंजन के साथ ही उसके समाचारों और सूचनाओं से भी लाभ उठाते हैं। इसी प्रकार टीवी श्रृंखलाएँ भी बहुत से लोगों का मनोरंजन करते हुए उनके रिक्त समय को भर देती है और उन्हें निरन्तर टीवी के सामने बैठने पर बाध्य कर देती है।

अतः वर्तमान में संचार माध्यम की अधिकता को देखते हुए अध्ययनकर्त्री द्वारा विद्यार्थियों के मूल्यों के मध्य सम्बन्ध को जानने का प्रयास किया गया है।

## समस्या कथन—

“माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के संचार माध्यम के प्रयोग का उनके मूल्यों के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना।”

## अध्ययन का उद्देश्य—

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित उद्देश्य का अध्ययन किया गया है—

1. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के संचार माध्यम के प्रयोग का उनके प्रतिबद्धता के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के संचार माध्यम के प्रयोग का उनके चुनौती के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना।
3. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के संचार माध्यम के प्रयोग का उनके समस्या समाधान के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना।
4. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के संचार माध्यम के प्रयोग का उनके समूह कार्य के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना।
5. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के संचार माध्यम के प्रयोग का उनके अनुशासन के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना।
6. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के संचार माध्यम के प्रयोग का उनके मेहनत के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना।
7. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के संचार माध्यम के प्रयोग का उनके ईमानदारी के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना।
8. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के संचार माध्यम के प्रयोग का उनके समय पालन के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना।
9. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के संचार माध्यम के प्रयोग का उनके आत्म-निर्भरता के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना।
10. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के संचार माध्यम के प्रयोग का उनके सहयोग के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना।

11. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के संचार माध्यम के प्रयोग का उनके सम्पूर्ण मूल्यों के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना।

#### परिकल्पना—

1. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के संचार माध्यम के प्रयोग का उनके प्रतिबद्धता के मध्य कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।
2. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के संचार माध्यम के प्रयोग का उनके चुनौती के मध्य कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।
3. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के संचार माध्यम के प्रयोग का उनके समस्या समाधान के मध्य कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।
4. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के संचार माध्यम के प्रयोग का उनके समूह कार्य के मध्य कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।
5. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के संचार माध्यम के प्रयोग का उनके अनुशासन के मध्य कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।
6. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के संचार माध्यम के प्रयोग का उनके मेहनत के मध्य कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।
7. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के संचार माध्यम के प्रयोग का उनके ईमानदारी के मध्य कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।
8. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के संचार माध्यम के प्रयोग का उनके समय पालन के मध्य कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।
9. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के संचार माध्यम के प्रयोग का उनके आत्म-निर्भरता के मध्य कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।
10. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के संचार माध्यम के प्रयोग का उनके सहयोग के मध्य कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।
11. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के संचार माध्यम के प्रयोग का उनके सम्पूर्ण मूल्यों के मध्य कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।

#### शोध—प्रविधि

अध्ययन में शोध विधि के अन्तर्गत वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत सहसंबंधात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। जनसंख्या प्रयागराज जनपद के माध्यमिक विद्यालयों के छात्र छात्राएँ हैं। प्रयागराज जनपद के माध्यमिक विद्यालयों का चयन स्तरीकृत प्रतिदर्श प्रतिचयन विधि द्वारा 20 विद्यालयों का चयन तथा कक्षा-9 में अध्ययनरत् 600 विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक न्यादर्शन विधि द्वारा किया गया है। उपकरण के रूप में स्वनिर्मित ‘संचार माध्यम का प्रभाव’ एवं डॉ० अर्चना दूबे (एसो. प्रोफे., स्कूल ऑफ एजूकेशन, हेड ऑफ डिपार्टमेण्ट, स्कूल ऑफ सोशल साइंस, देवी अहिल्या यूनिवर्सिटी, इन्दौर (म.प्र.)) एवं महेन्द्र पटिदार (सीनियर रिसर्च फेलो, स्कूल ऑफ एजूकेशन, देवी अहिल्या यूनिवर्सिटी, इन्दौर (म.प्र.)) द्वारा निर्मित ‘पर्सनल वैल्यू क्वेश्चनायर’ का प्रयोग किया गया है। ऑकड़ों के विश्लेषण हेतु सहसंबंध आघूर्ण गुणांक सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है।

#### ऑकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या—

1. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के संचार माध्यम के प्रयोग का उनके प्रतिबद्धता के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन —

सारणी—1

क्र०सं०	मूल्य	संख्या	सहसंबंध गुणांक का मान	सार्थकता
1	प्रतिबद्धता	600	-0.047	असार्थक

सारणी संख्या—1 से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यार्थियों के संचार माध्यम का उनके प्रतिबद्धता के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक का मान  $-0.047$  है जो .05 स्तर पर असार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना “माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के संचार माध्यम के प्रयोग का उनके प्रतिबद्धता के मध्य कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है”, स्वीकृत होती है। अतः कहा जा सकता है कि संचार माध्यम का विद्यार्थियों के प्रतिबद्धता के मध्य सम्बन्ध नहीं है अर्थात् संचार माध्यम का अधिक एवं कम प्रयोग करने पर उनके प्रतिबद्धता में वृद्धि या कमी नहीं होगी।

## 2. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के संचार माध्यम के प्रयोग का उनके चुनौती के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन –

सारणी—2

क्र0सं0	मूल्य	संख्या	सहसंबंध गुणांक का मान	सार्थकता
1	चुनौती	600	-0.099*	सार्थक

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यार्थियों के संचार माध्यम का उनके चुनौती के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक का मान  $-0.099$  है जो .05 स्तर पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना “माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के संचार माध्यम के प्रयोग का उनके चुनौती के मध्य कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है”, निरस्त होती है। अतः कहा जा सकता है कि संचार माध्यम का विद्यार्थियों के चुनौती के मध्य सम्बन्ध है अर्थात् संचार माध्यम का अधिक प्रयोग करने पर चुनौती में कमी एवं कम संचार माध्यम का उपयोग उनके चुनौतियों में वृद्धि होगी।

## 3. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के संचार माध्यम के प्रयोग का उनके समस्या समाधान के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन –

सारणी—3

क्र0सं0	मूल्य	संख्या	सहसंबंध गुणांक का मान	सार्थकता
1	समस्या समाधान	600	0.091*	सार्थक

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यार्थियों के संचार माध्यम के प्रयोग का उनके समस्या समाधान के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक का मान  $0.091$  है जो .05 स्तर पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना “माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के संचार माध्यम के प्रयोग का उनके समस्या समाधान के मध्य कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है”, निरस्त होती है। अतः कहा जा सकता है कि संचार माध्यम के प्रयोग का विद्यार्थियों के समस्या समाधान के मध्य धनात्मक एवं सार्थक सम्बन्ध है अर्थात् संचार माध्यम का अधिक प्रयोग करने पर विद्यार्थियों के समस्या समाधान में वृद्धि एवं कम संचार माध्यम का प्रयोग करने पर विद्यार्थियों के समस्या समाधान में कमी होगी।

4. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के संचार माध्यम के प्रयोग का उनके समूह कार्य के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन –

सारणी-4

क्र0सं0	मूल्य	संख्या	सहसंबंध गुणांक का मान	सार्थकता
1	समूह कार्य	600	-0.092*	सार्थक

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यार्थियों के संचार माध्यम के प्रयोग का उनके समूह कार्य के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक का मान -0.091 है जो .05 स्तर पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना “माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के संचार माध्यम के प्रयोग का उनके समूह कार्य के मध्य कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है”, निरस्त होती है। अतः कहा जा सकता है कि संचार माध्यम के प्रयोग का विद्यार्थियों के समूह कार्य के मध्य ऋणात्मक एवं सार्थक सम्बन्ध है अर्थात् संचार माध्यम का अधिक प्रयोग करने पर विद्यार्थियों के समूह कार्य में कमी एवं कम संचार माध्यम का प्रयोग करने पर उनके समूह कार्य में अधिकता होगी।

5. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के संचार माध्यम के प्रयोग का उनके अनुशासन के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन –

सारणी-5

क्र0सं0	मूल्य	संख्या	सहसंबंध गुणांक का मान	सार्थकता
1	अनुशासन	600	-0.167*	सार्थक

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यार्थियों के संचार माध्यम के प्रयोग का उनके अनुशासन के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक का मान -0.167 है जो .05 स्तर पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना “माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के संचार माध्यम के प्रयोग का उनके अनुशासन के मध्य कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है”, निरस्त होती है। अतः कहा जा सकता है कि संचार माध्यम के प्रयोग का विद्यार्थियों के अनुशासन के मध्य ऋणात्मक एवं सार्थक सम्बन्ध है अर्थात् संचार माध्यम का अधिक प्रयोग करने पर विद्यार्थियों के अनुशासन में कमी एवं कम संचार माध्यम का प्रयोग करने पर उनके अनुशासन अधिक होगा।

6. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के संचार माध्यम के प्रयोग का उनके मेहनत के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन –

सारणी-6

क्र0सं0	मूल्य	संख्या	सहसंबंध गुणांक का मान	सार्थकता
1	मेहनत	600	-0.019	असार्थक

सारणी संख्या-6 से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के संचार माध्यम का उनके मेहनत के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक का मान -0.019 है जो .05 स्तर पर असार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना “माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के संचार माध्यम के प्रयोग का उनके मेहनत के मध्य कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है”, स्वीकृत होती है। अतः कहा जा सकता है कि संचार माध्यम का विद्यार्थियों के मेहनत के मध्य सम्बन्ध नहीं है अर्थात् संचार माध्यम का अधिक एवं कम प्रयोग करने पर उनके मेहनत में वृद्धि या कमी नहीं होगी।

7. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के संचार माध्यम के प्रयोग का उनके ईमानदारी के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन –

सारणी—7

क्र0सं0	मूल्य	संख्या	सहसंबंध गुणांक का मान	सार्थकता
1	ईमानदारी	600	-0.053	असार्थक

सारणी संख्या—7 से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यार्थियों के संचार माध्यम का उनके ईमानदारी के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक का मान -0.053 है जो .05 स्तर पर असार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना “माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के संचार माध्यम के प्रयोग का उनके ईमानदारी के मध्य कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है”, स्वीकृत होती है। अतः कहा जा सकता है कि संचार माध्यम का विद्यार्थियों के ईमानदारी के मध्य सम्बन्ध नहीं है अर्थात् संचार माध्यम का अधिक एवं कम प्रयोग करने पर उनके ईमानदारी में वृद्धि या कमी नहीं होगी।

8. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के संचार माध्यम के प्रयोग का उनके समय पालन के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन –

सारणी—8

क्र0सं0	मूल्य	संख्या	सहसंबंध गुणांक का मान	सार्थकता
1	समय पालन	600	-0.201*	सार्थक

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यार्थियों के संचार माध्यम के प्रयोग का उनके समय पालन के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक का मान -0.201 है जो .05 स्तर पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना “माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के संचार माध्यम के प्रयोग का उनके समय पालन के मध्य कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है”, निरस्त होती है। अतः कहा जा सकता है कि संचार माध्यम के प्रयोग का विद्यार्थियों के समय पालन के मध्य ऋणात्मक एवं सार्थक सम्बन्ध है अर्थात् संचार माध्यम का अधिक प्रयोग करने पर विद्यार्थियों के समय पालन में कमी एवं कम संचार माध्यम का प्रयोग करने पर उनके समय पालन अधिक होगा।

9. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के संचार माध्यम के प्रयोग का उनके आत्म-निर्भरता के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन –

सारणी—9

क्र0सं0	मूल्य	संख्या	सहसंबंध गुणांक का मान	सार्थकता
1	आत्म-निर्भरता	600	-0.063	असार्थक

सारणी संख्या—9 से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यार्थियों के संचार माध्यम का उनके आत्म-निर्भरता के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक का मान -0.063 है जो .05 स्तर पर असार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना “माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के संचार माध्यम के प्रयोग का उनके आत्म- निर्भरता के मध्य कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है”, स्वीकृत होती है। अतः कहा जा सकता है कि संचार माध्यम का विद्यार्थियों के आत्म-निर्भरता के मध्य सम्बन्ध नहीं है अर्थात् संचार माध्यम का अधिक एवं कम प्रयोग करने पर उनके आत्म-निर्भरता में वृद्धि या कमी नहीं होगी।

10. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के संचार माध्यम के प्रयोग का उनके सहयोग के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन –

सारणी-10

क्र0सं0	मूल्य	संख्या	सहसंबंध गुणांक का मान	सार्थकता
1	सहयोग	600	-0.015	असार्थक

सारणी संख्या-10 से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के संचार माध्यम का उनके सहयोग के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक का मान -0.015 है जो .05 स्तर पर असार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना “माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के संचार माध्यम के प्रयोग का उनके सहयोग के मध्य कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है”, स्वीकृत होती है। अतः कहा जा सकता है कि संचार माध्यम का विद्यार्थियों के सहयोग के मध्य सम्बन्ध नहीं है अर्थात् संचार माध्यम का अधिक एवं कम प्रयोग करने पर उनके सहयोग में वृद्धि या कमी नहीं होगी।

11. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के संचार माध्यम के प्रयोग का उनके मूल्यों के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन –

सारणी-11

क्र0सं0	मूल्य	संख्या	सहसंबंध गुणांक का मान	सार्थकता
1	सम्पूर्ण मूल्य	600	-0.047	असार्थक

सारणी संख्या-11 से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के संचार माध्यम का उनके मूल्यों के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक का मान -0.047 है जो .05 स्तर पर असार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना “माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के संचार माध्यम के प्रयोग का उनके मूल्यों के मध्य कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है”, स्वीकृत होती है। अतः कहा जा सकता है कि संचार माध्यम का विद्यार्थियों के मूल्यों के मध्य सम्बन्ध नहीं है अर्थात् संचार माध्यम का अधिक एवं कम प्रयोग करने पर उनके मूल्यों में वृद्धि या कमी नहीं होगी।

**निष्कर्ष**

ऑकड़ों के परीक्षणोंपरान्त निष्कर्षतः –

- माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के संचार माध्यम के प्रयोग का उनके प्रतिबद्धता, मेहनत, ईमानदारी, आत्म-निर्भरता, सहयोग एवं सम्पूर्ण मूल्यों के मध्य सम्बन्ध नहीं है अर्थात् संचार माध्यम के प्रयोग से उनके प्रतिबद्धता, मेहनत, ईमानदारी, आत्म-निर्भरता, सहयोग एवं सम्पूर्ण मूल्यों से सम्बन्धित नहीं है।
- माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के संचार माध्यम के प्रयोग का उनके समस्या समाधान के मध्य धनात्मक एवं सार्थक सहसम्बन्ध है अर्थात् अधिक संचार माध्यम के प्रयोग करने वाले विद्यार्थियों में समस्या समाधान की क्षमता अधिक है।
- माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के संचार माध्यम के प्रयोग का उनके चुनौती, समूह कार्य, अनुशासन एवं समय पालन के मध्य ऋणात्मक एवं सार्थक सहसम्बन्ध है अर्थात् अधिक संचार माध्यम के प्रयोग करने वाले विद्यार्थियों में चुनौती, समूह कार्य, अनुशासन एवं समय पालन की कमी है।

अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि संचार माध्यम का प्रयोग एक समय सीमा में प्रयोग करने से विद्यार्थियों के चुनौती, समूह कार्य, अनुशासन एवं समय पालन को प्रभावित नहीं करेगा जहाँ अधिक संचार माध्यम का प्रयोग विद्यार्थी करते हैं उनमें चुनौती, समूह कार्य, अनुशासन एवं समय पालन को प्रभावित करेगा। संचार माध्यम के अधिक प्रयोग करने वाले विद्यार्थी एकाकी होने लगते हैं जिनसे वे अपने परिवार, दोस्तों एवं समूहों से दूर रहते हैं और उनके सामने आने वाले चुनौती के साथ अनुशासन एवं समय पालन में कमी आने लगती है लेकिन अधिक संचार माध्यम प्रयोग करने वाले विद्यार्थियों में समस्या समाधान में वृद्धि पायी गयी इसका कारण संचार माध्यम में दिखाये जाने वाले कार्यक्रमों के माध्यम से विद्यार्थियों के सामने आने वाली समस्याओं के समाधान को आसानी से कर सकते हैं।

अध्ययन में प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर कह सकते हैं कि अभिभावकों को अपने बच्चों के द्वारा संचार माध्यमों के प्रयोग किये जाने पर विशेष ध्यान देना चाहिए और उनके द्वारा देखे जाने वाले कार्यक्रमों के साथ-साथ समय-सीमा पर भी विशेष ध्यान देना चाहिए जिससे बच्चों पर संचार माध्यम का नकारात्मक प्रभाव न पड़ सके तथा अभिभावकों को अपने बच्चों को विशेष तौर पर उन्हें संचार माध्यम के सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभाव को खुलकर बताना चाहिए साथ ही बच्चों को घर के बाहर एवं समाज में खेले जाने वाले खेलों एवं उनके दोस्तों के साथ बाहर जाने दिये जाना चाहिए जिससे बच्चों में समूह कार्य, आत्म-निर्भरता, प्रतिबद्धता, चुनौती आदि मूल्यों में वृद्धि हो सके।

### संदर्भ ग्रन्थ सूची

- पाण्ड्या, शकुन्तला (1989) वर्तमान भारतीय शिक्षा के छात्रों पर परम्परागत सांस्कृतिक मूल्यों के प्रभाव का अध्ययन, आर0एस0आई0ई0आर0टी0, पृष्ठ सं0 70–74।
- पाण्डेय सत्यप्रकाश (1990) ए स्टडी ऑफ रिलेशनशिप बिटवीन वैल्यूज एण्ड मार्डर्निटी विद स्पेशल रिफरेन्स टू कालेज स्टूडेन्ट्स, पी-एच.डी. (साइको), पटना विश्वविद्यालय, पटना।
- गुप्ता, एन0एल0 (2001) ए कम्प्रेटिव स्टडी ऑफ द इफैक्टिवनेस ऑफ वैरियस स्ट्रेटजीज़ फार द डेवलपमेन्ट ऑफ मोरल वैल्यूज, पी-एच.डी. थीसिस राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर।
- वेन्स, एच.0ई0डी0 (2005) एन एक्सप्लोरेटरी स्टडी इन वैलयू एजूकेशन एण्ड इट्स रिलेशनशिप, इन बुच (एजु) ए सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन, पृष्ठ सं0 470–470।
- वर्मा आई0 बी0 (2005) एन इन्वेस्टीगेशन इनटू द इम्पैक्ट ऑफ ट्रेनिंग आन द वैल्यूज, इन बुच (एजू) ए सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन, सी0एस0एस0ई0, पृष्ठ संख्या 402–403।
- माथुर, जी0पी0 (2006) वैल्यू एण्ड इट्स इफैक्ट ऑन आफीसियल स्टेटस इन रिलेशन टू जाब सैटिसफैक्शन, सेन्ट जार्ज कालेज, भुवनेश्वर, इण्डियन जर्नल ऑफ साइकोलॉजी एण्ड एजूकेशन अंक 37, पृष्ठ सं0 13–16।
- कुमार, सुबोध (2010). वैदिक मानवीय मूल्यों की प्रासंगिकता : शिक्षा के सन्दर्भ में, व्याख्याता, दूरस्थ शिक्षा निदेशालय, ल.ना. मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, इण्टरनेशनल सेमिनार ऑफ टीचर एजूकेशन फॉर पीस एण्ड हॉरमोनी।
- मेहता, दीपा एवं मनोज कुमार (2010). शैक्षिक परिवेश में मूल्य विकास : शिक्षक की अहम भूमिका, मूल्य विमर्श, वर्ष-5, अंक-10 जुलाई, मालवीय मूल्य अनुशीलन केन्द्र, वाराणसी, पृ0 29–31